आयु की अवस्था एवं करण

क्रम	अवस्था	आयु	आश्रम	सक्रिय करण	शक्ति
	१	२	३	४	५
१	गर्भावस्था	गर्भधान से जन्म तक	–	चित्त	संस्कार
२	शिशु अवस्था	जन्म से पाँच वर्ष	–	चित्त	संस्कार
३	बाल अवस्था	६ से १२ वर्ष	ब्रह्मचर्याश्रम	कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय, मन का भावनापक्ष	क्रिया, अनुभव, भावना
४	किशोरावस्था	१३ से १५ वर्ष	ब्रह्मचर्याश्रम	मन का विचार पक्ष, बुद्धि का निरीक्षण, परीक्षण, तर्क पक्ष	विचार, कुछ मात्रा में विवेक
५	तरूणावस्था	१६ से १६ वर्ष	ब्रह्मचर्याश्रम	बुद्धि(निरीक्षण, परीक्षण, साम्यभेद, तुलना, तर्क, अनुमान, संश्लेषण, विश्लेषण, समग्रता में आकलन)	विवेक
६	पूर्व युवावस्था	२० वर्ष से विवाह तक	ब्रह्मचर्याश्रम	सभी बहिःकरण और अन्तःकरण	विवेक, दायित्वबोध
७	उत्तर युवावस्था	विवाह से ३५ वर्ष तक	गृहस्थाश्रम	सभी करण किन्तु विशेष रूप से बुद्धि	विवेक और दायित्वबोध, कर्तृत्वभाव
८	पूर्व प्रौढ़ावस्था	३५ से ५० वर्ष तक	गृहस्थाश्रम	सभी करण विशेष रूप से अन्तःकरण	चिन्तन, दायित्वबोध, कर्तृत्वभाव
६	उत्तर प्रौढ़ावस्था	५० से ६० वर्ष तक	वानप्रस्थाश्रम	सभी करण	विवेक, दायित्वबोध
१०	पूर्व वृद्धावस्था	६० से ७५ वर्ष तक	वानप्रस्थाश्रम	सभी करण	विवेक, ज्ञाताभाव
११	उत्तर वृद्धावस्था	७५ से मृत्यु तक	संन्यासाश्रम (यह अनिवार्य नहीं है, संन्यास नहीं लिया तो वानप्रस्थाश्रम)	सभी करण	विवेक, ज्ञाताभाव

क्रम	शिक्षा का स्वरूप	शिक्षा देने वाले	क्या करें	क्या न करें
	६	७	८	६
१	माता का आहार, विहार, संगीत, क्रियाकलाप	माता	संस्कारक्षम वातावरण का निर्माण, गर्भ की सुरक्षा	चिन्ता, क्रोध, शोक आदि
२	आसपास के लोग तथा वातावरण से संस्कार ग्रहण करना, सीखने का अखण्ड पुरुषार्थ, अनुकरण	माता–पिता तथा घर के अन्य लोग, सहयोगी	लालन करें, सम्मान दें, गीत, खेल, कहानी, अन्य क्रियाकलाप	औपचारिक शिक्षा उपदेश, दण्ड न दें, विद्यालय न भेजे
३	क्रिया आधारित, प्रेरणा आधारित, अनुभव आधारित	घर में माता–पिता, विद्यालय में शिक्षक	संस्कारक्षम वातावरण, क्रियाकलाप, अनुभव और प्रेरणा	केवल लिखने–पढ़ने की शिक्षा
४	निरीक्षण और प्रयोग, संवाद, वार्तालाप, पठन, लेखन	घर में माता–पिता, विद्यालय में शिक्षक	संयम, परिश्रम, घर के अनेक काम, साधक–बाधक विचार	अक्रिय मनोरंजन, विजातीय मैत्री, अनुचित आहार–विहार
५	चिन्तन करना, समझना, निर्णय करना, अपना मत बनाना	घर में माता–पिता, विद्यालय में शिक्षक, अन्य वरिष्ठजन	स्वतंत्र बुद्धि से विचार करने दें, मित्रतापूर्वक व्यवहार करें	यान्त्रिक रूप से न पढ़ें, गैर जिम्मेदार न बनें
६	व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में दायित्व समझना, स्वतंत्र बुद्धि से निर्णय करना	घर में माता–पिता, विद्यालय में शिक्षक, ग्रन्थालय, अनुभवी लोग	कठोर ब्रह्मचर्य का पालन, दायित्व को स्वीकार	विलास, उच्छृंखलता
७	गृहस्थधर्म का पालन, शिक्षितों से संवाद, प्रत्यक्ष अनुभव से सीखना	माता–पिता, ग्रन्थ, समाज के वरिष्ठ लोग, स्वजन और मित्र	१. समर्थ सन्तान को जन्म देना, २. अर्थार्जन करना, ३. गृहस्थधर्म का पालन करना	१. असंस्कारी, अशिष्ट आचरण २. दायित्व का त्याग
८	कुलधर्म, समाजधर्म का पालन, दान, यज्ञ, सेवा, स्वाध्याय, विद्वानों और सन्तों का उपदेश	ग्रन्थ, विद्वान, सन्त, स्नेही, स्वजन, अनुभव	१. जो करें, समझ कर विवेकपूर्वक करें, २. सन्तानों को संस्कारयुक्त शिक्षा दें, ३. चरित्र का रक्षण करें	१. अविवेक और असंयम, २. अशिष्ट व्यवहार, ३. अनैतिक अर्थार्जन, ४. अधार्मिक आचरण
६	१. कुलधर्म, समाजधर्म का चिन्तन और व्यवहार, २. नई पीढ़ी को इन सबका हस्तान्तरण	अनुभव, ग्रन्थ, सन्तजन, विद्वज्जन, स्वजन	१. क्रमशः आसक्ति कम करें, २. सन्तानों को दायित्व सौंप दें, ३. समाजसेवा हेतु सिद्धता प्राप्त करें	१. विलास, २. अशिष्ट और अविचारी व्यवहार, ३. नई पीढ़ी से स्पर्धा और तुलना
१०	१.मनो व्यापारों का अवलोकन, २. जगत् के व्यवहारों का अवलोकन	समाज, शास्त्रग्रन्थ, विद्वज्जन, सन्तजन	१. समाज सेवा, २. दायित्वों का हस्तान्तरण, ३. नई पीढ़ी का मार्गदर्शन, ४. अधिकारों का त्याग, ५. कथा श्रवण, ६. तीर्थयात्रा	१. अर्थार्जन, २. भोगविलास, ३. दायित्वों का त्याग, ४. अधर्मयुक्त आचरण
११	१. चिन्तन, २. अनुसन्धान, ३. मार्गदर्शन	शास्त्रग्रन्थ, सन्तजन, विद्वज्जन, जगत्	१. यात्रा, २. आसक्ति का त्याग, ३. अपेक्षाओं का त्याग, ४. उदारता, ५. क्षमाशीलता, ६. सत्य और धर्म के प्रति निष्ठा, ७. संयम, ८. तप, ६. ईश्वर प्रणिधान	१. अस्वास्थ्यकर और असंस्कृत आचरण, २. परिवार और समाज के व्यवहारों में हस्तक्षेप, ३. बचकाना व्यवहार